I Paper. B.A. I (Hons) Paper - Ist

Topic - ① Sankhya Purusa

Explain Critically the Sankhya theory of Purusa. How does Sankhya Prove the existence of many Purusas.

सांख्य दर्शन एक द्वैतवादी दर्शन है, जो पुरुष और प्रकृति दोनों को एक दूसरे से स्वतंत्र, पारमार्थिक सत्ता के रूप में स्वीकार करता है, और इन दोनों के आधार पर सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या देने का प्रयास करता है। साधारणतः जिस सत्ता को भारतीय दर्शन के अन्य सम्प्रदायों ने आत्मा या जीव की संज्ञा दी जाती है, उसे ही सांख्य दर्शन में पुरुष कहा जाता है। पुरुष एक स्वतः प्रमाणित सत्ता है। इसके अस्तित्व को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है। पाश्चात्य दर्शन में Descartes तथा भारतीय दर्शन में अद्वैतवादी के प्रणेता शंकराचार्य ने भी आत्मा को स्वतः प्रमाणित सत्ता के रूप में स्वीकार किया है। जिस प्रकार जैन दर्शन चैतन्य को जीव का स्वभाव मानता है (चेतना लक्षणों जीवः), उसी प्रकार सांख्य दर्शन भी चैतन्य को पुरुष का स्वभाव मानता है। पुरुष; शरीर, बुद्धि, अहंकार, ज्ञानेन्द्रियाँ इत्यादि से पृथक है। शरीर एक भौतिक सत्ता है, लेकिन पुरुष चेतन होने के कारण आध्यात्मिक सत्ता है। बुद्धि और अहंकार प्रकृति की विकृतियाँ होने के कारण जड़ है। विभिन्न ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञान के उपकरण हैं और पुरुष उन ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने वाला ज्ञाता है।

सांख्य दर्शन में पुरुष को ज्ञाता, निष्क्रिय, अकर्ता, निस्त्रय, साक्षी, उदासीन, द्रष्टा, मध्यस्त, भोक्ता, इत्यादि गुणों से युक्त माना गया है। सांख्य दर्शन के पुरुष संबंधी विचार भारतीय दर्शन के अन्य सम्प्रदायों के आत्मा या जीव संबंधी विचार से पृथक है। जहाँ जैन दर्शन जीव को कर्ता तथा भोक्ता दोनों स्वीकार किया है, वहाँ सांख्य दर्शन पुरुष को अकर्ता तथा भोक्ता मानता है। न्याय - वैशेषिक दर्शन में आत्मा को अचेतन माना गया है, आत्मा का संसर्ग जब शरीर, इन्द्रिय तथा मन के साथ होता है, तो उसमें चैतन्य का आविर्भाव होता है। इस प्रकार न्याय - वैशेषिक दर्शन के अनुसार चैतन्य आत्मा का स्वभाव नहीं बल्कि

Scanned with CamScanner

आकस्मिक गुण है। लेकिन इसके विपरीत सांख्य

चैतन्य को पुरुष का स्वभाव मानता है। सांख्य दर्शन का पुरुष विचार, अद्वैतवेदान्त के आत्मा संबंधी विचार से भी पृथक है। अद्वैत वेदान्त के प्रणेता शंकराचार्य आत्मा को सत्, चित् तथा आनंद मानते हैं। जबकि सांख्य दर्शन पुरुष को सत् और चित् मानता है, लेकिन आनंद नहीं मानता है। क्योंकि आनंद सत्व का गुण है, और हम जानते हैं कि सांख्य का पुरुष त्रिगुणातीत है। साथ ही शंकर आत्मा को एक मानते हैं, लेकिन सांख्य दर्शन पुरुष को अनेक मानता है।

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि सांख्य दर्शन का पुरुष संबंधी विचार भारतीय दर्शन के अन्य सम्प्रदायों के आत्मा संबंधी विचार से पृथक है। यद्यपि सांख्य दर्शन पुरुष को स्वतः प्रमाणित सत्ता मानता है। लेकिन ईश्वरकृष्ण ने अपनी 'सांख्यकारिका' में पुरुष के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए मुख्य रूप से पाँच प्रकार के तर्कों का प्रयोग किया है। जिन्हें निम्नलिखित कारिका के द्वारा व्यक्त किया गया है:—

"संघात परार्थत्वात् त्रिगुणादि विपर्ययाद् अधिष्ठानात्।
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च॥"
(कारिका नं०-17)

अगर इस कारिका का विश्लेषण किया जाए, तो यह स्पष्ट होगा, कि इसके अन्तर्गत पुरुष के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए निम्न प्रमाणों का प्रयोग किया गया है:—

(1) संघात परार्थत्वात् → इसका अर्थ है, कि जितने भी सावयव पदार्थ होते हैं, वे सभी के सभी दूसरों के उपयोग के लिए होते हैं। सम्पूर्ण विश्व सावयव है, क्योंकि पंचमहाभूतों से विश्व के विभिन्न पदार्थों का निर्माण हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है, कि सम्पूर्ण विश्व भी दूसरों के उपभोग के लिए है। जिसके उपभोग के लिए विश्व का विकास होता है, पुरुष है।

2) त्रिगुणादि विपर्ययात् → इसका अर्थ है, कि जितने भी सांसारिक पदार्थ हैं, उसमें सुख-दुःख तथा उदासीनता उत्पन्न करने की शक्ति पायी जाती है; क्योंकि सभी पदार्थों का विकास प्रकृति से हुआ है और प्रकृति

Scanned with CamScanner

त्रिगुणात्मक है, इससे यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण विश्व साक्षी के रूप में इन तीनों गुणों से परे एक त्रिगुणातीत या निस्त्रैगुण्य सत्ता का अस्तित्व है और यही पुरुष है।

(iii) अधिष्ठानात् :- बुद्धि को ज्ञान का साधन माना जाता है। विवेकशील मनुष्य बुद्धि के द्वारा ही ज्ञान प्राप्त करता है। लेकिन बुद्धि प्रकृति की विकृति होने के कारण अचेतन है। अतः बुद्धि के अधिष्ठाता और संचालक के रूप में एक चेतन सत्ता को स्वीकार करना आवश्यक है और यही सत्ता पुरुष है।

(iv) भोक्तृभावात् :- इसका अर्थ है कि अचेतन प्रकृति अपनी विकृतियों का उपभोग स्वयं नहीं कर सकती है। प्रकृति भोग्या (enjoyment) है, और पुरुष भोक्ता (enjoyer) है। अगर प्रकृति सुख, दुःख तथा उदासीनता उत्पन्न करने की क्षमता रखती है, तो इससे यह प्रमाणित होता है कि इसका कोई उपभोक्ता चाहिए, यही उपभोक्ता पुरुष है।

(v) कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च :- सांख्य दर्शन के अनुसार यह विश्व आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक इन तीनों प्रकार के दुःखों से परिपूर्ण है। पुरुष इन दुःखों से छुटकारा पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। दुःखों से छुटकारा पाना कैवल्य कहलाता है। कैवल्य की चाह यह प्रमाणित करती है, कि इसको चाहनेवाला कोई चाहिए, यहाँ कैवल्य को चाहनेवाला पुरुष है।

इस तरह सांख्य दर्शन विभिन्न तर्कों के द्वारा पुरुष के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। यहाँ पुरुषों की संख्या अनेक मानी गयी है, जो सभी के सभी चेतन या आध्यात्मिक है। इस प्रकार पुरुषों की संख्या को लेकर सांख्य दर्शन आध्यात्मिक एकता में विश्वास करता है। यह विचार पाश्चात्य दार्शनिक लाइबनीज तथा भारतीय दर्शन में जैन दर्शन के जीव संबंधी विचार के समान है। अनेक पुरुषों के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए ईश्वरकृष्ण ने अपनी 'सांख्यकारिका' में मुख्य रूप से तीन प्रकार के तर्कों का प्रयोग किया है, जिन्हें निम्न रूप से व्यक्त किया जा सकता है:—

"जननमरणकरणानाम् प्रतिनियमात्, युगपत्प्रवृत्तेश्च।
पुरुष बहुत्वम् सिद्धम् त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव।"

Scanned with CamScanner

अगर इस कारिका का विश्लेषण किया जाये, तो हम पायेंगे, कि इसमें निम्नलिखित तीन तरह के तर्कों का प्रयोग किया गया है :—

(i) जननमरणकरणानाम् प्रतिनियमात् :— इसका अर्थ है, कि जब एक पुरुष जन्म लेता है, तो दूसरा मरता है, जब एक देखता है, तो दूसरा सोता है, इत्यादि। अगर पुरुष एक रहता तो एक के जन्म लेने से सभी का जन्म हो जाता या एक के मरने से सभी मर जाता, लेकिन ऐसा देखने को नहीं मिलता। इससे यह प्रमाणित होता है, कि पुरुष अनेक हैं।

(ii) युगपत् प्रवृत्तेश्च :— इसका अर्थ है, कि अगर पुरुष एक रहता, तो किसी एक पुरुष के बंधनग्रस्त होने से सभी के सभी पुरुष बंधनग्रस्त हो जाते या किसी एक पुरुष के मुक्त होने से सभी पुरुष मुक्त हो जाते। लेकिन कुछ पुरुष बंधनग्रस्त हैं और कुछ मुक्त, जो यह प्रमाणित करता है, कि पुरुष अनेक हैं।

(iii) त्रयगुणविपर्ययात् :— इसका अर्थ है, कि बंधनग्रस्त पुरुषों में विभिन्न गुणों की प्रधानता को लेकर अन्तर पाया जाता है। कुछ पुरुषों में सत्व गुण की प्रधानता होती है और कुछ में तमो गुण की और कुछ में रजो गुण की। इससे यह प्रमाणित होता है, कि पुरुष अनेक हैं।

इस प्रकार सांख्य दर्शन उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर पुरुष के अनेकता को प्रमाणित करता है।

लेकिन सांख्य दर्शन के पुरुष संबंधी विचार संतोषप्रद नहीं हैं, इसमें निम्न दोष दृष्टिगोचर होते हैं :—

(i) अगर सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष एक पारमार्थिक सत्ता है, तो यह बात स्पष्ट नहीं हो पाती है, कि किस प्रकार उसका रूपान्तरण जीवात्माओं में हो जाता है। क्योंकि अगर उसका रूपान्तरण होता तो वह परमार्थ नहीं रह सकता है।

(ii) एक ओर सांख्य दर्शन पुरुष को परमार्थ मानता है और दूसरी ओर जन्म-मरण के आधार पर उसके अनेकता को प्रमाणित करता है, लेकिन प्रश्न है, कि अगर पुरुष परमार्थ है, तो फिर उसका जन्म और मरण कैसे हो सकता है।

Scanned with CamScanner